



होमी भाषा विज्ञान शिक्षा केंद्र  
(एच.बी.सी.एस.ई., टी.आई.एफ.आर.)  
<https://chem.hbci.tifr.res.in/>

\*पैरासिटामॉल से संबंधित नहीं।

## क्रोसिन से रंगाई

क्रोसिन एक स्वतं रंजक है जिसका उपयोग सूती, लिनेन, और ऊन पर किया जा सकता है। इसे रंगबंधक की जरूरत नहीं क्योंकि अणु का आकार ही इसे फाइबर के साथ जोड़ने में मदद करता है। रंगे हुए कपड़े पर क्रोसिन एवं गहरा पीला रंग देते हैं।



यह रंग कच्चा होता है। इसलिए कपड़े को समय-समय पर केसर के कुछ रेशों के साथ उबालना चाहिए ताकि कपड़े का रंग खिलता रहे।



तेज रोशनी, विशेष रूप से सूरज की रोशनी, रंग को तेजी से फीका कर देती है। इसी तरह, गर्म पानी भी स्वतं रंग को थोड़ा देता है। इसलिए केसर से रंगे कपड़ों को ठंडे पानी में हल्के हाथ से धीना चाहिए या ड्राइवरीन करना चाहिए।



जो साधु केसर से रंगा हुआ ऊन पहनते हैं वे हर साल अपना वस्त्र फिर से रंगते हैं। चूंकि केसर बहुत महंगा है, वस्त्रों को रंगने के लिए हल्दी का भी उपयोग किया जाता है क्योंकि कम महंगा प्राकृतिक विकल्प है।

मोलर द्रव्यमान : 976.972 ग्राम मोल<sup>1</sup>  
गलनांक : 186 डिग्री सेल्सियस

### क्रोसिन



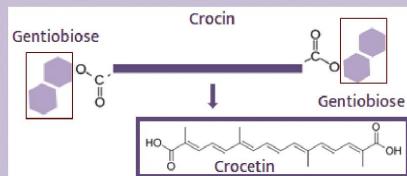
केसर गार्डिनिया

क्रोसिन केसर में मौजूद मुख्य रंग यौगिक है जो क्रोसस सटाइवस फूलों के वर्तिकाग्र (stigma) में पाया जाता है। केसर का गहरा पीला/ नारंगी रंग जो उसकी विशेषता है, मुख्य रूप से क्रोसेटिन और क्रोसिन के कारण है। अतीत में, इसे अमरीका पर रेशम और कपास की रंगाई के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

क्रोसिन को गार्डिनिया जैस्मिनोइड्स के फलों में भी पाया गया है। चूंकि गार्डिनिया की खेती करना केसर से काफी सस्ता है, इसे केसर के विकल्प के रूप में शोध किया जा रहा है।

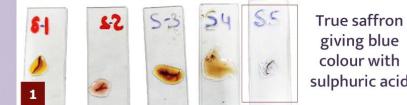
## क्रोसिन के रासायनिक गुण

क्रोसिन एक कैराटिनोयड है जो मुख्य रूप से डाइकार्बोक्सिलिक अम्ल, क्रोसेटिन से बना है, जिसमें क्रोसेटिन एक डाइऐसोक्रेटिड-जेटिओबायोस की दो इकाइयों को जोड़ता है। क्रोसिन को क्रोसेटिन का डाइजेटियोबायोस एस्टर भी कहा जाता है।



क्रोसिन को गहरे लाल रंग के क्रिस्टलीय यौगिक के रूप में निर्कषित किया जा सकता है। यह शुद्ध एल्कोहॉल, ईंधन और अन्य कार्बनिक विलयकों में बहुत कम घुलनशील है लालांक जब गरम पानी में मिलाया जाता है तो यह गहरा नारंगी रंग का घोल देता है।

द्विआंवर्धों की संयुक्ति शुभलालांक क्रोसिन और क्रोसेटिन के रंग गुणों के लिए जिम्मेदार है। ये सम्पर्याकृत और नाइट्रिक अम्ल के साथ अभिक्रिया पर एस्टर हाइड्रोलिसिस के कारण नीला रंग देते हैं। यह अभिक्रिया असली केसर की नकली केसर से अलग पहचान करने वाली तकनीकों में से है जो नकली केसर के साथ पीला या लाल रंग देती है।



## प्राकृतिक रंग बनाने की प्रक्रिया

भारत में क्रोकस फूलों की कटाई आमतौर पर सुबह ही की जाती है। फूलों से अलग किए गए वर्तिकाग्रों को हवादार छाया में या गर्म भृती में सुखाया जाता है।



पारंपरिक रूप से, क्रोसिन को सूखे वर्तिकाग्र को पानी में उबालकर निष्कर्षित किया जाता है। उच्च शुद्धता के यौगिकों को पाने के लिए क्रिस्टलीकरण, वर्णलेखिकी जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

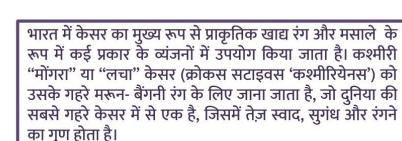
असली केसर काफी महंगा होने के कारण इसकी जगह अक्सर अमेरिकी केसर यानि कुसुम (कार्डिमस टिकटोरियस) इस्तेमाल किया जाता है या मिलावट की जाती है।

## क्या आप जानते हैं?

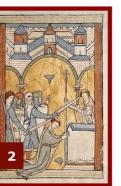
लगभग 1.5 किलो ताजा वर्तिकाग्रों को प्राप्त करने के लिए लगभग 2,50,000 क्रोकस सटाइवस फूलों की जरूरत होती है जो सूखने पर घटकर 1 किलो वाकी रह जाते हैं। केसर विश्व के सबसे महंगे मसालों में से एक है और इसे "लाल सोना" (red gold) भी कहा जाता है।

## केसर युद्ध

1347-1350 ईस्वी के दौरान, ब्युबोनिक प्लेग के इलाज के प्रयास में इसके क्वेंजनों में उपयोग किया जाता है। कश्मीरी "मोंगरा" या "लचा" केसर (क्रोकस सटाइवस 'कश्मीरियनस') की उसके गहरे प्रमुख वैग्नी रंग के लिए जाना जाता है, जो दुनिया की सबसे गहरे केसर में से एक है, जिसमें तेज खाद्य, सुगंध और रंगने का गुण होता है।



वर्तमान में ईरान दुनिया में केसर का सबसे बड़ा उत्पादक है, इसके बाद ग्रीस, मोरोक्को, भारत, अंग्रेजैजान, स्पेन, इटली, अफगानिस्तान आदि हैं। केसर की खेती, कटाई और प्रक्रमण में शम शामिल है। यह स्थानीय लोगों के लिए, खासकर महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करता है। उन क्षेत्रों में जहां केसर उपयोग जाता है, वहां जलवाया रपर्वतान और राजनीतिक उथल युथल के कारण केसर की कीमत में बढ़ोत्तरी होती रहती है, क्योंकि इसकी मांग लगातार बढ़ रही है।



केसरी रंगों का उपयोग चित्रकारी में भी किया जाता है। क्रोसिन का उपयोग कैसर, हृदय रोग, मानसिक खासगत्य, नेत्र रोग, जोड़ों में दर्द, एंटी-ऑक्सीडेंट गुण आदि से संबंधित औषधीय अनुसंधान अध्ययनों में भी किया जाता है।

### संदर्भ और आगे पढ़ने के लिए:

- Mohamad, I., Shukla, S. K., & Shakeel, W. (2015). Rapid Detection of Adulteration in Indigenous Saffron of Kashmir Valley, India. *Research Journal of Forensic Sciences*, 3(3), 7–11. Retrieved from [http://www.isca.in/FORENSIC\\_SCI/Archive/v3/i3/2.ISCA-RJFS-2015-005.pdf](http://www.isca.in/FORENSIC_SCI/Archive/v3/i3/2.ISCA-RJFS-2015-005.pdf)
- Xi, L., & Qian, Z. (2006). Pharmacological Properties of Crocetin and Crocin (Dgentiobiosyl Ester of Crocetin) from Saffron. *Natural Product Communications*, 1(1), 65–75. Retrieved from <https://journals.sagepub.com/doi/pdf/10.1177/1934578X0600100112> [Accessed in July 2020]-
- Kapil P, Kirti S, Mahipal S, Rajeev K. Forensic Identification of Fake & Genuine Saffron (Kesar) from Local Market of Greater Noida. *Forensic Sci Add Res*. 5(2).
- Earliest known portrayal of Thomas Becket's murder in Canterbury Cathedral.<https://www.cs.mcgill.ca/~rwest/wikispeedia/wpcd/images/116/11610.jpg.htm>
- Cover page and other images- Stock images from footer.com

### क्या आप बता सकते हैं?

- केसर का प्रक्रमण और व्यापार के दौरान कौन से सामान्य अनावरण आनाएं जाते हैं?
- केसर में मिलावट का पता लगाने के लिए किन तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है?
- क्या केसर का संशेषित तरीके से उत्पादन किया जा सकता है?

